Dr. Pooram Sharma
Assistant Professor
Dept of Philosophy
R.N. College,
Hajipur

Class — T.D.C. Part II
Paper — IV
पाश्चात्य दर्शन का इतिहास
(History of Western Philosophy)

Topic — Leibnitz — Monadology
लाइबनित्ज — चिदणुवाद

लाइबनित्ज — चिदणुवाद
(Leibnitz — Monadology)

जर्मनी निवासी लाइबनित्ज बुद्धिवादी परम्परा के दार्शनिक हैं। उनके अनुसार सत्य ज्ञान का स्रोत बुद्धि है, अनुभव नहीं। उनके विचार बुद्धिवादी दार्शनिकों डेकार्ट एवं स्पिनोजा से पृथक् हैं। प्रारम्भ में उन्होंने इन विचारकों के मतों का खण्डन किया है, उसके पश्चात् अपने प्रसिद्ध सिद्धान्त चिदणुवाद (Monadology) की विवेचना की है।

डेकार्ट के विचारों में निहित अनेक विसंगतियों का उन्होंने उल्लेख किया है। लाइबनित्ज का कहना है कि यदि जड़-तत्व में विस्तार होता है, तो उसमें विभाजन भी अवश्य होगा। इसलिए मूल तत्व को अविभाज्य नहीं कहा जा सकता। इसीप्रकार डेकार्ट के गति सम्बन्धी विचार को एवं मन-शरीर सम्बन्ध की व्याख्या को उन्होंने दोषपूर्ण माना है। उनके अनुसार पदार्थ कभी स्थिर भी रह सकता है। इसलिए गति को पदार्थ का आवश्यक गुण नहीं कहा जा सकता। उनके अनुसार डेकार्ट के मन-शरीर सम्बन्ध में दी गयी क्रिया-प्रतिक्रिया की व्याख्या भी समुचित नहीं है। इसीप्रकार उन्होंने स्पिनोजा के विचारों की भी आलोचना की है। लाइबनित्ज का कहना है कि स्पिनोजा एक ही द्रव्य में दो विरोधी गुणों (जड़ एवं चेतन) का समावेश मानते हैं। किन्तु यह विरोध के नियम का उल्लंघन करना है। इसके अतिरिक्त, नियतिवाद को स्वीकार करने से स्पिनोजा के दर्शन में मानवीय स्वतन्त्रता का कोई अर्थ नहीं रह जाता।

लाइबनित्ज मूल तत्व या द्रव्य को परिभाषित करते हुए कहते हैं कि यह क्रियात्मक शक्ति का केन्द्र है (Substance is to be defined by active force)। वे इसकी संख्या अनेक मानते हैं जो स्वतन्त्र शक्ति सम्पन्न है। इसप्रकार वे बहुतत्ववाद के समर्थक हैं। इस तत्व की क्रियाशक्ति पदार्थ एवं गति में रूपान्तरित होती है। जड़

पदार्थों में भी वे इस शक्ति को स्वीकार करते हैं। उनका कहना है कि इस शक्ति के कारण जड़-पदार्थों में विस्तार होता है एवं गति रहती है। विश्व के मूल में वे असंख्य स्वतन्त्र शक्ति के केन्द्र हैं, इन्हें लाइबनित्स मोनेड (Monad) कहते हैं। 'मॉनेड' शब्द ग्रीक भाषा के मानेस (Monas) शब्द से बना है, जिसका अर्थ होता है — इकाई। लाइबनित्स के पूर्व ब्रूनो नामक दार्शनिक ने Monad शब्द का उल्लेख किया है, किन्तु यह शब्द लाइबनित्स ने प्रसिद्ध रसायनशास्त्री वान हेलमोन्ट से लिया है।

लाइबनित्स ने चिदणुओं या Monads की अनेक विशेषताएँ बतलायी हैं। ये अत्यन्त सूक्ष्म, गणित के बिन्दु के समान एवं चेतन-स्वरूप होते हैं। चिदणुओं का विभाजन नहीं होता, इसलिए ये सरल एवं नित्य हैं। इनकी न कोई आकृति होती है और न ही ज्ञानेन्द्रियों द्वारा इनका प्रत्यक्ष होता है। ये चिदणु एक-दूसरे से अर्थतः स्वतन्त्र होते हैं अर्थात् इनका अपना विशिष्ट अस्तित्व होता है। द्रष्टा के अस्तित्व से ये चिदणु पृथक् होते हैं। इन चिदणुओं की विशेषता है कि ये गवाक्षहीन (Windowless) होते हैं अर्थात् इनके भीतर से बाहर या बाहर से भीतर किसीप्रकार का प्रकाश नहीं आता। इन अनेक चिदणुओं के कारण ही विश्व में विविधता है तथा विश्व के पदार्थ शक्ति केन्द्रों से युक्त हैं। ये चिदणु एक-दूसरे से स्वतन्त्र एवं गवाक्षहीन हैं, किन्तु उनके बीच पारस्परिक सम्बन्ध को लाइबनित्स स्वीकार करते हैं। उनका कहना है कि प्रत्येक चिदणु में ईश्वर द्वारा प्रदत्त ऐसी व्यवस्था है, जिससे वह विश्व को प्रतिबिम्बित करता है। चिदणु की यह प्रकृति ईश्वर के द्वारा प्रदान की गयी है, न कि वह विश्व से प्रभावित है।

लाइबनित्स ने चिदणुओं में ईश्वर के द्वारा प्रदत्त प्रकृति के अतिरिक्त दो प्रकार की शक्तियों का भी उल्लेख किया है। प्रत्येक चिदणु में ईक्षण (Perception) एवं प्रयासन (Appetition) — ये दो प्रकार की शक्तियाँ होती हैं।

ईक्षण शक्ति के कारण प्रत्येक चिदणु अन्य सभी की दशाओं को स्वयं में प्रतिनिधित करता है। उसकी दूसरी शक्ति प्रयास है जिसके कारण प्रत्येक चिदणु की दशा क्रमिक रूप में विकासरत है।

चेतना के विविध स्तर के आधार पर लाइबनित्स चिदणुओं के अनेक प्रकार बतलाते हैं। ये हैं —

(i) अचेतन चिदणु (Unconscious Monad) — ये जड़-स्वरूप हैं, जैसे — रेत, बालू आदि।

(ii) उपचेतन चिदणु (Sub-Conscious Monad) — इसके अन्तर्गत वनस्पति जगत् के प्राणी आते हैं।

(iii) सचेतन चिदणु (Conscious Monad) — जीव-जन्तु सचेतन चिदणु हैं जिसमें चेतना का स्तर इन्द्रिय-बोध, स्मृति आदि रूपों में कुछ स्पष्ट होता है।

(iv) आत्मचेतन चिदणु (Self-Conscious Monad) — यहाँ चेतना अधिक स्पष्ट होकर बुद्धि के स्तर पर रहती है। मानव इसके अन्तर्गत आते हैं। वह विशेष पदार्थों के ज्ञान के साथ-साथ सामान्य सत्य का भी चिन्तन करता है।

(v) चिदणुओं का चिदणु (Monad of Monads) — यह सर्वश्रेष्ठ चिदणु है, जो ईश्वर है। चेतना यहाँ पूर्णावस्था में रहती है।

इसप्रकार लाइबनित्स ने चिदणुवाद के रूप में अपने दार्शनिक विचार प्रस्तुत किये हैं।

——— X ——— X ———